

## सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का अष्टम् अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। देवेंद्र सिंह शेखावत द्वारा लिखित आधुनिक समय में पाण्डुलिपि की प्रासंगिकता : सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की खोज लेख में वर्तमान समय में पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में पाण्डुलिपियाँ सुख, सामंजस्य और कल्याण को बढ़ावा देने में सहायक हैं। डॉ. विनोद कुमार शर्मा द्वारा लिखित पं. स्थाणुदत्त पाण्डुलिपि अनुभाग : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय - एक परिचय लेख में पं. स्थाणुदत्त के व्यक्तित्व, उनके द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पाण्डुलिपियों को संग्रहित करने के लिए किये गये अद्वितीय प्रयासों का उल्लेख किया है। डॉ. रेशु तिवारी द्वारा लिखित अथर्ववेद में वर्णित आयुर्वेद चिकित्सा के विभिन्न सोपान : एक अध्ययन" लेख में अथर्ववेद में वर्णित विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों का संक्षिप्त वर्णन है। प्रोफेसर डॉ. मंजुल मिश्रा द्वारा लिखित सतत् विकास के लिए हरित रसायन के नवाचार लेख में सतत् विकास में हरित रसायन की भूमिका एवं हरित रसायन विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे नवाचारों का वर्णन है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काढ़कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा